धर्म जीवन

मई – जून 2005

- ✡ बरसी व माता पिता दिवस
- ✡ सुख लालसा की कैद
- ✡ क्या हम अहं प्रेमी हैं?
- ✡ स. सावन सिंह फरिश्ता बाप की बरसी
- ✡ श्राद्ध का साधन
- ✡ शुभ संग्राम
- ✡ PEARLS SUBLIME .....
- ✡ A TREAT FOR THE BLOSSOMING SOULS

बरसी व माता पिता दिवस

विशेष सम्मान के योग्य डाक्टर इकबाल सिंह जी के सम्बंध में बरसी की सभा उनके पारिवारिक जनों ने माता पिता दिवस के रूप में मनाई। 30 जनवरी को उनके सारे बच्चों (उनकी एक बेटी वा नाती कैनेडा से भी आई हुई थी) ने सदा उनकी बरसी को माता पिता दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। इस सभा के लिए हाल को बहुत सुसज्जित ढंग से संवारा गया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की पवित्र छवि को ऊँचे स्थान पर रखा गया, नीचे डाक्टर जी की सुन्दर फोटो रखी गई। गुरु महाराज की छवि पर फूलों का सुन्दर हार चढ़ाया गया।

पहले "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" नामक भजन का गान किया गया। भजन उनकी बेटियों ने मिलकर गाया। उसके बाद डाक्टर जी का हारों व फूलों से अर्चन किया। लगभग 40 के करीब उनके पारिवारिक जन वा बच्चे शामिल थे। उसके बाद "माता पिता की सेवा महसूस कर रही हूं" नामक भजन का गान किया।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हम बड़ों वा उपकारियों के गुणों व उपकारों को देखने के सम्बंध में अंधे हैं। हम उनके प्रति अपनी गल्तियों को देखने में भी असमर्थ हैं। इसलिए सम्बंधों में कड़वाहट पैदा होती है। डाक्टर जी के भीतर श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव थे, जिन्होंने उन्हें इस संगत से जोड़े रखा। उनका बयान बहुत प्रभावशाली था और बहुत अच्छा मण्डल बन गया। उसके बाद श्रीमान निर्मल सिंह जी ने डाक्टर जी के गुणों और उनके जीवन की प्रेरणादायक कई घटनाएं बताई। उसके बाद उनकी बड़ी बेटी सुरजीत जी ने अपने सौभाग्य का वर्णन किया कि वह ऐसे माता पिता की संतान है। सभा में बहुत सारे बच्चे थे। इसलिए बच्चों को यह बताया कि उनका कितना सौभाग्य है कि उन्हें तन्दरुस्त वा सुन्दर शरीर मिले हैं, यह माता पिता का उपकार है। आप बच्चों के लिए माता पिता सुबह से शाम तक किस प्रकार संघर्ष करते हैं ताकि उन्हें सुख सुविधाएं मिलें। अच्छे और महंगे स्कूलों में पढ़ाते हैं, परन्तु कहना न मानकर, अपनी पढ़ाई न करके आप माता पिता को दुख पहुंचाते हो।

इस प्रकार के बयान को सबने बहुत सराहा और ऐसे प्रोग्रामों को बार बार रखने का आग्रह भी किया।

उसके बाद उनके बड़े बेटे ने तर आंखों से अपने माता पिता के अथाह उपकारों का ब्यान किया कि किस प्रकार उन्होंने अपना सब कुछ बच्चों को दे दिया, अपने लिए कुछ नहीं रखा। ऐसे माता पिता कम होते हैं।

फिर उनकी छोटी बेटी सतिन्द्र ढिल्लों ने पिता जी की मेहरबानियों को बयान किया कि किस प्रकार हर भले काम के लिए वह उनको प्रेरणा देते थे।

फिर डाक्टर साहिब की बड़ी पोती ने भरे दिल से बयान किया कि मैं बेजी, पिता जी की इस बात से आभारी हूं कि उन्होंने हमें शानदार परिवार दिया, जिसमें हमें अथाह प्यार मिला है। हमें चाचा, पिता, चाची, मां में कोई अंतर नज़र नहीं आता। सब बहन भाई एक ही माता पिता के बच्चों की तरह रहते हैं। यह सब बेजी पिता जी की मेहरबानी है।

यह सारा प्रोग्राम बहुत प्रभावदायक रहा। इसके बाद सबको बहुत स्वादिष्ट भोजन कराया गया।

(एक हाजरीन)

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 4
मई – जून 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सुख लालसा की कैद

मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से ही सुख परायण है। सुख का आशिक है और दुख को घृणा करता है। मनुष्य भिन्न भिन्न सुखों का बोधी और प्रेमक है। वह आजाद दिखाई देता है। परन्तु वास्तव में वह सुख के विभिन्न प्रकार के पिंजरों में कैद है। इस लिहाज़ से मनुष्य की प्रकृति पशुओं से भिन्न है। उसे सुख दुख के बोध पशुओं से ही विरासत में मिले हैं। पशुओं के भीतर सुख और दुख की तमीज़ है, परन्तु वह सुख के वह साधन नहीं बना सकता, जो मनुष्य बना सकता है। मनुष्य की विकसित बुद्धि ने सुखों के अम्बार खड़े कर दिए हैं और उसकी सारी सोच ही सुख लालसा की कैदी है। मनुष्य को जिस प्रकार एक एक सुख खींचता है, उस प्रकार उसको अपना शुभ वा हित नहीं खींचता। सुख की पूर्ति में वो अपनी भले को न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहता है। यह मनुष्य का वास्तव में असली रूप है।

मनुष्य की धुरी सुख है। सुख के आगे बुद्धि पिछड़ जाती है। मनुष्य का सारा खान पान, पहरावा, उसके संगी साथी, उसका कारोबार उसके मूल्य और कीमतें, उसका जीवन लक्ष्य, उसका धर्म, सब उसके अपने सुखों की लालसाओं के द्वारा बड़े वेग से प्रभावित होते हैं।

जो कुछ खाने पीने में स्वाद लगता है, सुखदायक प्रतीत होता है, मज़ा वा सरूर देता है, मनुष्य उसका ही गुलाम हो जाता है। वह जिस चीज़ का खुद लालसी होता है, उसकी फिर वकालत करता है। सुखदायक पदार्थों की प्रशंसा करता है, उसका पक्षपाती बन जाता है, दूसरों के लिए भी उसकी पोषकता करता है। खाने में सुख प्राप्त करना कोई बुरी बात नहीं परन्तु खान पान के साथ हमारी सेहत वा आरोग्यता जुड़े हुए हैं। साधारणत: मनुष्य सेहत को मुख्य रखकर खान पान निर्धारित नहीं करता, सुख ही सदा बाजी मार ले जाता है। सेहत के लिए हानिकारक वस्तुएं सुख अनुरागी मनुष्य त्याग नहीं सकता। डाक्टर होकर और दूसरों को हिदायतें देकर भी खुद उनका पालन नहीं कर सकता। नशों के सुख के अनुरागी नशों से बर्बाद हो जाते हैं परन्तु छोड़ नहीं सकते। कुछ चटपटे पदार्थों के शैदाई हैं, तो कोई अधिक मीठा खाने

के। फिर बिना फीस के दूसरों के पास उनकी वकालत करते हैं। सुख उनको घसीटे फिरते हैं, उनके परिणामों से बेख़बर वह खुश प्रसन्न रहते हैं।

बचपन से ही यह सुख रूपी सांप अपना फन निकाल लेते हैं। एक बेहद सुन्दर लड़की ज्यों ज्यों बड़ी होती गई, वह मीठे के सुख की अनुरागी बनती गई। माता ने भी बच्ची समझकर नहीं रोका परिणाम यह हुआ कि वह इतनी मोटी हो गई कि उसकी शादी करनी कठिन हो गई। उसकी सुन्दरता को उसके मोटापे ने डस लिया। पिता ने बड़ी मेहनत करके 3 – 4 महीने उसे भूखा प्यासा रखकर, व्यायाम करवाके इस योग्य किया कि वह फिर सुन्दर दिखने लगी और ऐसा लगता था कि अब यह ऐसी गल्ती नहीं करेगी परन्तु वह सुखों की गुलामी ही क्या, जो मनुष्य को अपना भला सोचने दे। अब 33 – 34 साल की उम्र में उसका मोटापा इतना बढ़ गया कि देखने वालों को तरस आता है। उसको सबने समझा लिया परन्तु कोई असर नहीं। मौत सामने दिखाई देती है, परन्तु सुख के आगे अब वह बेबस है। आजकल बच्चे Fast Food वा तरह तरह के कोक, पेप्सी, चाकलेट, टॉफीज़ ही इतनी मात्रा में खाने लग गए हैं कि छोटी उम्र में तरह तरह की बिमारियों के शिकार हो जाते हैं। 35 – 40 वर्ष की उम्र में दिल के दौरे बढ़ रहे हैं, परन्तु अपने सुख लालसाओं में अंधे इंसान मौत को गले लगाने के लिए सरपट दौड़ रहे हैं।

नशों का सुख मनुष्य को उनका वकील बना देता है। शराब के दो पैग लगाने से दिल को जाने वाली Veins खुली रहती हैं इस बात का बहुत प्रचार है परन्तु यह कहने वाले कितने जन हैं, जो दो पैग पीकर हट जाते हैं। डाक्टर कहते हैं, सो हम पीते हैं। परन्तु प्रत्येक ऐसे लेख में यह लिखा होता है कि न पीने वाले इस तर्क को लेकर शुरू न करें। मनुष्य की नशे के सुख की विवशता ने ऐसे शोशे घड़े हैं, और यह दलीलें बहुत अच्छी लगती हैं। कोई शराब को चौदहवां रतन कहता है। एक फारसी के बड़े शायर ने मुस्लिम होके शराह में शराब पूर्ण रूप से वर्जित है यह जानकर भी लिखा है जिसका अर्थ है कि यह वह दवाई है, कि जो एक भिखारी को कारूं बादशाह बना देती है।

मनुष्य प्रकृति कितनी अजीब है। मनुष्य ने अपना नंगेज़ ढकने के लिए कुछ न कुछ पहनना शुरू किया था। गर्मी सर्दी से बचने का भी मकसद था धीरे धीरे पहरावा अमीरी का चिन्ह बन गया। मान प्रशंसा प्राप्त करने का आधार बन गया और मनुष्यों ने पोशाक को इतना महत्व दिया कि चाहे खाने को कम मिले, परन्तु कपड़े कमाल चाहिएं। सर्दी में कीमती कपड़ों का दिखावा करने के लिए स्त्रियां गर्म कपड़े नहीं पहनती पीछे से चाहे कमर दर्द हो या टांग दर्द।

मनुष्य को संग साथ भी ऐसे ही मनुष्यों का चाहिए, जो उसे सुख देते हों। परन्तु मनुष्य की भलाई इसमें है कि वह अपने से बुद्धिमान, योग्य, अपने शुभचिन्तक, परोपकारी वा सात्विक जीवन धारियों को अपना संगीसाथी चुने, परतु वह जीवन नाश करने वाले जनों के संग रहकर संतुष्ट रहता है। उनका परस्पर का सम्बंध चाहे कितना भी हानिकारक क्यों न हो, वह छोड़ेगा नहीं, खुद तबाह हो जाएगा।

गन्दी संगत से एकांत बेहद कीमती है

परन्तु सुख अनुराग उसे यह सचाई देखने नहीं देते।

"कुन्द हम जिन्स, ना हम जिन्स परवाज,
कबूतर वा कबूतर, बाज़ बा बाज़।"

सुख की खींच के कारण मनुष्य को अपने शत्रु प्यारे लगते हैं। वह अपने हितैषियों को नहीं पहचानता। जैसे कबूतर कबूतरों के साथ और बाज़ बाज़ों के साथ ही रहना पसन्द करते हैं, वैसे ही नशे के प्रेमक नशेबाजों के साथ, जूएबाज जूएबाजों के साथ रहना ही पसंद करते हैं। एक दूसरे के साथ रहने में तृप्ति अनुभव करते हैं। इस प्रकार सुख अनुरागों की तृप्ति में शत्रु मित्र नज़र आते हैं।

मनुष्य का व्यवसाय और कारोबार भी उसके सुख ही निर्धारित करते हैं। जब बच्चों को पढ़ाई लिखाई अच्छी नहीं लगती मेहनत करने पर कई सुख छिनते हैं, तो वह और काम सीखने लग जाते हैं, इस प्रकार हज़ारों लाखों जन अनपढ़ रह जाते हैं। बहुत कम ऐसे इंसान हैं कि किसी अपने आकर्षण को छोड़कर कोई कठिन काम हाथ में लें। जब बच्चे सिनेमा, टी. वी. और आवारागर्दी में सुख ढूंढने लगते हैं, तो कुछ बच्चे अपनी मर्जी से और कुछ अपने अभिभावकों के दबाब से पढ़ाई में लगे रहते हैं। उस समय के कुछ वर्षों के सुख लेने वाले मजदूर बन जाते हैं। और सुख छोड़ने वाले ऊँचे पदों पर तैनात हो जाते हैं।

मनुष्य के सुख ही उसका लक्ष्य निर्धारित करते हैं। जो सुख सबसे प्रबल है, वही प्राप्त करना मनुष्य का लक्ष्य है। अधिकतर जनों का लक्ष्य अधिक से अधिक पैसा कमाना होता है। ऐडवरड आठवें ने एक स्त्री मिसिज़ सैंपसन के लिए इंगलैंड के तख़्तोताज का त्याग कर दिया। कई जन धन की सुपारी लेकर, केवल धन के लिए ऐसे जनों का कत्ल कर देते हैं, जिनको वह जानते तक नहीं। इसी प्रकार एक एक वैश्या के लिए कई जन धन, घर-बार सब छोड़ देते हैं।

साधारणत: मनुष्य धर्मों को भी सुख के अनुसार ही अपनाता है। धार्मिक स्थानों पर बड़े बड़े अपराधों को देखकर भी अपने अभ्यास वा सुख वा उसी में फंसे रहते हैं। अपने पिछड़े और मिथ्या विश्वासों में ही सुख मिलता है। धर्मों ने इसी का लाभ उठाकर तरह तरह के सुख देने का लालच देकर मनुष्य को अंधा और पागल बना रखा है।

मनुष्य के मूल्य सुख को लेकर हैं। कसाई भी अपने पेशे को ठीक समझता है, वैश्यावृति में भी अकसर सुखों का बोलबाला है। सुख के विरुद्ध सुनना तक गवारा नहीं होता।

उपरोक्त सचाईयां पुकार पुकार कर कह रही हैं कि मनुष्य हृदय पर सुख लालसाओं का अनुचित अधिकार है, वह अपना जीवन सुख लालसाओं के निर्देश पर व्यतीत करता है। इनके हानिकारक पक्ष को वह नहीं देख सकता। सुख की कैद को तोड़कर कुछ सोचना उसके वश की बात नहीं जैसे मछली आटे की गोली में छुपे कांटे को नहीं देख सकती, उसी प्रकार सुखों में लिपटे दुखों को मनुष्य देख नहीं सकता।

ऐसी सामर्थ्य देवात्मा की रोशनी में है, वह सुखों की भयानक तस्वीर को दिखाते भी हैं और उनसे निकलने का बल प्रदान करते हैं। उनकी शरण में आना अपनी योग्यतानुसार नीच सुखों के जाल से निकलने के प्रयत्न में पड़ने में ही मनुष्य मात्र की भलाई है। पग पग पर यह सुख हमें गुमराह करते हैं।

क्या हम अहं प्रेमी हैं?

'अहं' का या 'मैं' का या अपनत्व का प्यार मनुष्य का सबसे भयानक शत्रु है। प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी उच्च से उच्च वर्ग का हो 'अहं' का आशिक है। दर्जों का फर्क़ हो सकता है। अहं का सबसे बड़ा दोष यह है कि अहं को देखना, जानना वा स्वीकार करना महा कठिन बात है। इस अहं प्रेम का दास होकर मनुष्य अपनी हानि और दूसरों की हानि करने के लिए लाचार रहता है। वह एक हानिकारक और हिंसक जीव बना रहता है। अत्याचारी, ज़ालिम, हक अपहरणकारी, अपमान करने वाला और ज्यादतियां करने वाला इस अहं के कारण बनता है।

साधारणत: मनुष्य यदि यह जानना चाहे कि क्या वह अहं प्रेमी वा अहंकारी है, उसको अपने आप कुछ पता नहीं लगता और वह स्वाभाविक दूसरेां को अहं अनुरागी और अपने आपको अहं रहित ही समझता रहता है। बहुत ही कम लोगों को अहं का थोड़ा बहुत बोध होता है।

अहं प्रेम को देखने की एक कसौटी यह है कि आप अपने नौकरों, अपने अधीन कर्मचारियों, अपने सहायकों को

1. गरज गरज कर बोलते हैं, क्या तुम उनको सम्बोधन करते समय हाकमाना ढंग से बुलाते हो और अपनी हैंकडी दिखाते हो।
2. क्या तुम धीरे चलने पर या किसी छोटे मोटे कसूर पर उन्हें डांटने लगते हो, कोई दिन ऐसा नहीं बीतता जब तुमने उनको अपमानित न किया हो, और उनकी कमियों पर अपना पारा नहीं उतारा हो।
3. क्या तुम उनको अशिष्ट ढंग के शब्दों से सम्बोधन करते हो, कड़वे शब्दों या गाली निकालकर उनका निरादर करते हो।
4. किसी सच्चे वा झूठे दोष पर दुखी होकर उसके ऊपर हाथ उठा लेते हो, उसका गला पकड़ लेते हो उसको नीचा दिखाने की कोशिश करते हो।

इन चार बातों की मात्रा जितनी है, तुम कितने बड़े अहं अनुरागी, उस बात को समझने के लिए यह चार बातें बहुत सहायक हो सकती हैं। यदि उपरोक्त बातों में से पहली बात ही तुम्हारे जीवन में है तो तुम्हारा अहं अनुराग अभी छोटे स्तर का है, दूसरी बात पूरी होती है तो समझ लो अहंकार जवान हो रहा है। तीसरा व्यवहार प्रगट करता है कि अहंकार पल पोस रहा है, मोटा ताजा हो रहा है। चौथा लक्षण अगर तुम्हारे जीवन में घटता है, तो तुम्हारे भीतर अहंकार के अम्बार बन गए हैं। तुम अहं के अवतार बनने के मार्ग पर पड़ गए हो।

अहंकारी के लिए अपने से छोटों पर गर्जना, उन्हें नाहक बुरा भला कहना, धक्का देना और ऐसा करके कुछ शर्मिन्दा न होना और इसमें अपनी खूबी समझना, अपनी ताकत समझना अवश्यम्भावी है।

अहंकारी मनुष्य महा हानिकारक जीव होता है। वह नाना प्रकार के अत्याचार, जुल्म और दूसरों के लिए तसीहों से भरा होता है। अपने चारों तरफ जिंदा जहन्नुम पैदा करता रहता है। इसको अपना अधिकार ख्याल करता है। दूसरों की सुख शान्ति अपहरण करता है।

किसी से कोई चीज़ गिर जाए, टूट जाए, खाना अच्छा न बने, जितनी तेजी काम में चाहिए वह न मिले, कोई वस्तु चाहे अपनी रखी हुई ही न मिले, दूसरों को

अपमानित करने का कोई मौका नहीं छोड़ता, वही गल्तियां अपनी सब क्षमा योग्य समझता है। अहंकारी जन चाहता है कि दूसरे सदा उसका हुक्म बजाएं, परन्तु आप किसी के हुक्म में चलना नहीं चाहता। अपनी इच्छा सदा दूसरों पर थोपता है, यदि दूसरा कोई अपनी इच्छानुसार चले तो उसे मनमुखी कहकर ख़फा होता है।

अहं अनुराग का यह एक पहलु है। कई जन ऊंचा भी नहीं बोलते, देखने वालों को बहुत नर्म वा दीन लगते हैं, परन्तु अपनी इच्छा पूर्ति के लिए षड्यन्त्र रच रचकर दूसरों को कभी न पूरी होने वाली हानि पहुंचाते हैं। अहं अनुराग तो सौ मुखों वाला सांप है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने इसके विषय में फरमाया है :-

आत्मा के कुछ नीच अनुरागों या नीच सुखों के प्रेमों में से अहं अनुराग या "मैं" का प्यार सबसे बढ़कर हानिकारक और विनाशकारी अनुराग है। पूर्ण "मैं" के प्रेमी या अहं अनुरागी के लिए अपने प्रत्येक सम्बंध में स्वार्थी होना या रहना अवश्यम्भावी है। वह संसार में विद्वान हो या मूर्ख, अमीर हो या गरीब, वह पद रखने वाला हो, भद्र मनुष्य हो या छोटा, शारीरिक रूप से ताकतवर हो या कमज़ोर, रंग के विचार से गोरा हो या काला, वह अपनी रूह या आत्मा के लिहाज़ से अति घटिया दर्जे का मनुष्य है।

घमंडी मनुष्य के लिए नेचर ने भलाई के सब दरवाजे बंद कर रखे हैं। इसलिए ऐसे मनुष्य की जिन्दगी पर नेचर ने यह मोहर लगा दी है कि वह बेहतर न बन सके।

अहं भाव का जो अधिकार, उससे पाऊं मैं उद्धार
हृदय को यह नीच बनाता, बड़ों का भी अपमान कराता,
पतनकारी घृणा उपजाता, होवे उसका जब अधिकार।
स्वेचछाचारी है यह बनाता, मिथ्यापन में है ले जाता,
दोष अपने सुनने नहीं देता, होवे उसका जब अधिकार,
हितकारी को बैरी दिखाता, उसको दोषी है ठहराता
सत्य देव से बेमुख करता, होवे उसका जब अधिकार।

शोक समाचार

बहुत बहुत शोक व गहरे दु:ख की बात है कि हमारे नौजवान साथी सेवक श्रीमानबलकार सिंह जी पुत्र श्री रूड़ सिंह जी मल्लेका (सिरसा) का अचानक 2 मई को सवेरे सवेरे एक उल्टी आने के बाद देहान्त हो गया। वह केवल 36 वर्ष के थे। वे अपने पीछे पत्नी व दो छोटे छोटे बच्चों को छोड़ गए हैं। उनका श्राद्ध शनिवार 7 मई को उनके निवास स्थान पर होगा।

स. सावन सिंह फरिश्ता बाप की बरसी

इस वर्ष 27 मार्च 2005 को उन की बरसी उनके पोते प्रीतपाल सिंह गिल्ल के घर नं. 1661, चण्डीगढ़ में मनाई गई। बरसी की सभा आरम्भ होने से पहले श्रीमति सुनील भुटानी और मि. राठौर ने "मां प्यारी मां और बदला अदा कैसे करूं मां तेरे अहसान का" दो गीत अत्यंत सुरीली आवाज़ में गाये। गीतों का अपनापन आंखों से बहते आंसुओं से लगाया जा सकता है।

बरसी की सभा सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने सरदार जी के परिवार को बधाई दी जो पिछले 62 साल से उनकी बरसी मना रहे हैं। उनके विचार में यह निराला परिवार है जो अपनी मानसिक तथा अध्यात्मिक योग्यताओं सदका इस रस्म को बखूबी मना रहे हैं और उनकी बरसी को माता पिता दिवस के रूप में मनाते हैं। प्रतिवर्ष उनका उत्साह तथा बढ़ती हाज़री उन सब के विशेष हृदयों का प्रतीक है।

श्रीमान जी ने सरदार साहिब के जीवन की विशेषताओं को दोहराया। उनके जीवन की सादगी परिश्रम, बहुत ऊँचे दरजे की ईमानदारी तथा श्रद्धा के गुणों की बहुत ही भावुक हो कर व्याख्या की। उनमें केवल दूसरों के गुण देखने की आंख थी। उनकी विशेष ऊंची हस्ती से प्रभावित हो कर अंग्रेज गर्वनर ने उन्हें फरिश्ता तहसीलदार कहने पर मजबूर हो कर उनको कई मुरब्बे जागीर प्रदान की। वह एक मामूली जिमीदार से उठकर सरदार साहब का खिताब पर 10 मुरब्बा के मालिक बन गए। उन्होंने परिवार को उनसे पाई पूंजी को सम्भाल कर रखने की प्रेरणा दी।

सभा के बाद उनकी बेटी हितलता दियोल ने ऐसे फरिश्ता बाप तथा देवी मां की संतान होने के गर्व को बताया

कई महान लोगों ने मां के रूप को पहिचाना है Ibrahim Lincon, Thomas Edison रविन्द्रनाथ टेगौर, स. गुरबख्श सिंह प्रीतलड़ी सब ने कहा है कि वह जो कुछ भी हैं या बनना चाहते हैं यह देवी मां का सदका है।

26 तारीख के Hindustan Times अखबार में निकला था कि 42000 न अंग्रेजी बोलने वाले लोगों की राय में Mother is the most beautiful word in English language परिवार में कुछ नुकस अवश्य हैं परन्तु फिर भी विरसे में खूबियों की जायदाद पाई है। उन्होंने और बाद में उनके भाई की लड़की गुरमीत कौर ने बताया कि परिवार के प्राय: सभी लड़कों, लड़कियों तथा बहुओं ने मां बाप की दिल से सेवा की। उन्होंने बुढ़ापे में बिमारी में दूर दूर से पहुंच कर बहुत सेवा की। अभी पीछे ही मां के accident होने पर हवाई जहाज पर पहुंच कर बहुत बड़े अफसर दीपी तथा राणी उनके ठीक होने तक पास हस्पताल में रहे।

पाली ने वीर गुरभगत सिंह की लम्बी बीमारी में अपने आराम की परवाह न करके उनकी सेवा की। अब अपनी माता की जो खतरनाक बिमारी में ग्रस्त हैं, दौड़ दौड़ कर उनकी हर जरूरत पूरी करता है। मां उनकी ओर से पूरी तरह संतुष्ट है। अपने बच्चों को दादी से मिलने की हिदायत करता है। कर्नल भगवंत सिन्नी के बच्चे की जरूरत के समय तुरन्त उनकी सेवा में पहुंच जाते हैं।

गुरमीत गुरदियाल की बेटियां, दामाद, बच्चे मम्मी, नानी करके उनके उनके इर्द गिर्द रहते हैं। गुडडु, गुरदेव, उनके बेटे बीबी की सेवा के लिए हाजर हो जाते हैं।

निक्की के लड़के मम्मी पापा की बहुत कदर करते हैं।

कुलदीप वीर हर शरणु के बेटे ने कनेडा से लिख कर भेजा है "मुझे इस महान परिवार का सदस्य होने का गर्व है। दादा ने परिवार का नाम रोशन किया। फिर उनके माता पिता ने जो कुछ उन्हें बनाया है, उसका उदाहरण उनके आठों बच्चे हैं। मां ने कड़ी मेहनत, बाप ने स्वयं अनुशासन contentment पिरथी भाई जैसे सफल किसान, बहादुर Pilot और वीर चका प्रीत सभी बहिनें बड़ी माहर है और जीवन में अतिसुखी हैं।

परिवार में उन्हें सब से बड़े भाई का सन्मान तथा प्यार हासिल है। सब बुला बुलाके खिलाते हैं। जीत का बेटा कमल के पास जब विक्टोरिया जाओ तो वह अपना बैडरूम हमें देकर खुद जमीन पर सोते हैं।

लोग कहेंगें कि पिछले जन्म के कर्मों का फल है पर मैं कहूंगा यह मां बाप दादा अम्मा की देन है।

फिर दीपी बरार ने जो हिन्दोस्तान की Navy Deptt. के ऊपर के आठ सात आफसरों में एक है, अपने मम्मी पापा के गुणों की व्याख्या की। विशेष कर उनकी मां ने बहुत मुसीबत सह कर उन्हें बढ़िया शिक्षा दिलवाई। उनसे दिमाग पा कर बहुत अच्छे वातावरण में शिक्षा पा कर दोनों भाई अपनी अपनी जगह पर बहुत सफल रहे। मां से कड़ी मेहनत, प्लानिंग और कफायतशारी सीखी और बाप से देना सीखा। उनके बाद पाली B.P.S. Gill वीर गुरभगत सिंह जी के बेटे ने बिना कहने भरे दिल से ब्यान किया कि

जब हमारे मां बाप जिंदा होते हैं तो हम उनकी कीमत नहीं पहचानते। यदि पहिचान सकें तो हमारा भी भला होता है और वह भी धन्य धन्य होकर आशीर्वाद देते हैं। हमारी संतान के लिए भी एक अच्छा उदाहरण पेश करते हैं। पापाजी के होते हुए कभी सोचा नहीं कि उनके जाने के बाद कैसा लगेगा। अब जब मैं घर में दाखिल होता हूं, तो वही घर मुझे खाली खाली लगता है। अब केवल उनकी यादें ही रह गई हैं। मैं यह अनुभव करता हूं कि मां बाप हमारे सबसे बड़े दोस्त तथा भला चाहने वाले हैं। उनकी असली कीमत उनके जाने के बाद पता लगती है, उनके जीते जी हमें उनके लिए अधिक से अधिक करना चाहिए।

अंत में उसने अपने रिश्तेदारों और अपनी पत्नी का धन्यवाद किया जिन्होंने हर मुसीबत में उनका साथ दिया।

बरसी का वातावरण अत्यंत सराहनीय था। सभा में दो घंटे से अधिक माता पिता के गुणों का वर्णन होता रहा। सभापति जी बार बार बहुत अच्छा कहते रहे। सबने बिना शोरोगुल समागम का पूरा लाभ उठाया। उठकर भी सब एक दूसरे की तथा अलौकिक वातावरण की प्रशंसा करते बिछड़े।

अंत में बेटी हित लता दियोल ने श्रीमान जी और सब अज़ीजों का दिली शुक्रिया किया विशेषकर प्रीतपाल तथा उनकी बीबी रतनेश जिन्होंने समागम की हर तैयारी को परखा तथा निभाया। उन्होंने फिर सबसे अपील की कि जिस समाज ने पिता जी को फरिश्ता बनाया, जिनकी वजह से परिवार ऊपर उठा, सरदारीयां पाईं, उसके लिए दिल खोल कर दान दें।

बहुत खुशी की बात है कि इस बरसी पर 500/- रूपये दान समाज को दिया। 70 से अधिक जनों को उत्तम स्वादिष्ट भोजन खिलाया। Quality & Quantity की तारीफ करना मुश्किल है।

श्राद्ध का साधन

जैसे कि पहले सूचित किया जा चुका है कि श्रीमती सरस्वती देवी जी तायल धर्मपत्नी श्रीमान शादी लाल जी तायल का 27 फरवरी को देहांत हो गया है। व उनका अंतिम संस्कार 28 फरवरी 2005 को देवधर्म की विधि के अनुसार हुआ। उस के सम्बंध में श्राद्ध का साधन मोगा में कॉलेज रोड़ पर स्थित धर्मशाला में 13 मार्च इतवार को 12.30 बजे रखा गया।

इस अवसर पर उनकी तीन लड़कियां अमरीका व कनेडा से प्रभाजी, शशी जी व वीरबाला जी पहुंच गई थीं। इसके अलावा संगरूर व मोगा वाली बेटियां भी शामिल थीं। उनके सब रिश्तेदार चण्डीगढ़, संगरूर, दिल्ली, मोगा व अन्य स्थानों से व अन्य स्नेह करने वाले जन भी पहुंच गए। बहुत से धर्म सम्बंधी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इस साधन के करवाने के लिए चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान जगदीश जी, श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा यमुनानगर, श्रीमान सीता राम जी संगरूर, श्रीमान बलबहादुर जी कल्याण व श्रीमान सुखदेव जी समय पर पहुंच गए। कुल बाहर व लोकल जनों समेत 300 के करीब हाजरी थी।

सभी के खाने का उचित प्रबंध किया गया था। धर्मशाला में बड़े हाल में स्टेज बना कर गुरू महाराज की सुन्दर फोटो रखी गई। उस के नीचे देह त्यागी की बड़े साईज़ की फोटो रखी गई। फूलों के हारों व फूलों का प्रबंध किया गया।

ठीक 12.30 बजे श्रीमान जगदीश जी ने "बागे दुनियां..... है चन्द रोज" वाला भजन गाना शुरू कर दिया जिससे हाजरीन ने हाल में बैठना शुरू कर दिया। इस भजन के बाद गुरू महाराज की छवि को सुन्दर हार द्वारा अर्चन किया गया। देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। फिर सब ने खड़े रहकर देह त्यागी की फोटो का हार द्वारा अर्चन किया। सभी बच्चों व सम्बन्धियों ने हाजरीन ने भी फूल रखकर सम्मान प्रदर्शन किया। फिर सब के बैठ जाने पर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्राद्ध साधन सम्बंधी सारी कार्यवाई बताई। इस के बाद देह त्यागी जी की लड़कियों ने मिलकर 'परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएगे' वाला भजन हृदयगत भावों से गाया। इस के बाद सभापति जी ने देह त्यागी के जीवन के मोटे मोटे हालात बताते हुए उनकी बीमारी व मौत के बारे बताया। परलोक सम्बंधी गुरू महाराज की शिक्षा का संक्षिप्त ब्यान किया। फिर देहत्यागी जी के जीवन के सद्गुणों का ब्यान किया। जिस प्रकार उन्होंने इतने बड़े परिवार को पाला है, अपने पति जी का पूरा सहयोग दिया है। समाज की सभाओं में जाकर समाज की सेवका बनीं। अपने ससुर व सास की पूरी खुशनुदी हासिल की, वह सब विशेष है। उनके नेक, सेवाकारी, स्पष्ट व सच बोलने व बल झल व कपट रहित स्वभाव के बारे में, गऊ सेवा, दान आदि देने, किसी से भी लड़ाई झगड़े से रहित जीवन का ब्यान किया। फिर श्रीमान शादी लाल जी का उनके सम्बंध में एक पत्र पढ़ कर सुनाया गया। इसके बाद उनकी बेटी प्रभा जी ने अपना सुन्दर भावों से भरा पत्र पढ़ा। फिर कुछ जनों ने अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। जिसका वर्णन इस प्रकार है।

श्रीमान स्वामी शरण जी (दामाद) :- इस परिवार से जुड़ कर मुझे बहुत कुछ प्राप्त हुआ है। मैंने बहुत कुछ जिन्दगी में यही से सीखा है। मुझे बहुत उच्च जीवन धारी माता पिता (सास ससुर) मिले। बहुत ही ऊँचा समाज मिला। मैंने यहां से अपने माता पिता की सेवा करनी सीखी व उनकी सेवा करने का अवसर पाया। मुझे बहुत ही नेक, हमदर्द व सेवाकारी धर्मपत्नि मिली है। मैं जो कुछ भी अपने माता पिता के काम आता था, वह इस समाज के कारण ही था। मैं इस परिवार में एक बेटा बन कर आया था व बेटा बनकर ही रहा। कभी दामाद बनकर नहीं रहा। पापा जी (श्रीमान शादी लाल जी) ने अपनी वसीयत में मुझे अधिकार दिया। बीजी ने भी मुझे यह अधिकार दिया। मेरा यह सौभाग्य है कि सब बच्चे विदेश से आकर मेरे पास ठहरते हैं। मुझे अपना जानते हैं। हम सभी मिल कर इस घर को खुला रखने का यत्न करेंगे। मन्दिर वाला भाग में मन्दिर बना रहेगा। बाकी भाग भले काम में आ सके। जितनी देर मैं हूं, प्रभा जी के साथ मिल कर कोशिश करेंगे कि यह घर खुला रहे। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी : मैंने बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान शादी लाल जी व उनकी धर्म पत्नि जी के कई सालों तक दर्शन किए हैं। उनसे सेवा भी पाई है। प्रभा जी व शशी जी से बहुत अच्छे असर मिलते रहे हैं। स्वामी शरण जी के भावों को जानकर मैं नतमस्तक होता हूं।

श्रीमान सीता राम जी : मैं जो कुछ भी हूं, वह श्रीमान शादी लाल जी की बदौलत हूं। उन्होंने मेरी बेहद मदद की है। मेरी भी 6 लड़किया हैं उन सब को पैरों पर खड़ा करने में बहुत ही आप का सहायोग पाया है। मेरे बच्चे को मैडिकल में दाखिल करवाने के लिए उन्होंने हौंसला दिया। मेरा प्लाट बिकवाया। उनकी श्रीमती जी मेरे साथ बहुत सम्बंध महसूस करती थीं। श्रीमान शादी लाल जी ने जो रास्ता दिखाया है। वह कभी भूल नहीं सका। मैं उनके बिना यतीम महसूस करता हूं। उनकी आत्मा को शांति मिले। मेरी यह कामना है।

समय बहुत हो चुका था। सभापति जी ने हाजरीन का धन्यवाद किया। 2900 इस अवसर पर दान प्राप्त हुआ। देह-त्यागी की लड़कियों ने मिलकर शुभ कामना सम्बंधी गीत उच्च भावों से गाया। फिर सभापति जी ने देह त्यागी जी के लिए हृदय के भावों से शुभ कामना की। चार बार जय ध्वनि के साथ यह साधन सम्पन्न हुआ।

उनकी बेटी प्रभा जी ने अपने पत्र द्वारा श्रद्धांजली भेंट की

मेरे विशेष सम्मान के योग्य मेरी जन्मदाता, पालनकर्त्ता और रक्षादाता माता जी,

आपके पवित्र श्री चरणों में झुक कर प्रणाम करती हूं।

25-26 फरवरी से ही मन बहुत बेचैन हो रहा था। मैंने Attawa से कई बार India फोन किए। आपकी तबीयत ठीक नहीं चल रही थी। 26 तारीख की रात को मैं करीबन 9 बजे ही बिस्तर पर चली गई जब कि 12 बजे से पहले मैं कभी भी सोने नहीं जाती। बहुत बुरे बुरे ख्याल आ रहे थे। थोड़ी देर रो कर मन हल्का किया और न जाने कब झपकी आ गई। सुबह 3 बजे झटके के साथ आंख खुली तो फिर दिल घबराने

लगा नींद नहीं आ रही थी। करीबन साढ़े चार बजे के करीब वीरबाला के फोन से आपके बारे में वो खबर मिली जिसको कभी भी सुनने के लिए मैं तैयार नहीं थी। मैंने India आने का प्रोग्राम बनाया ही हुआ था बस थोड़े ही दिनों का फर्क रह गया था। इस बात का दुख बार बार हो रहा था कि काश! आप कुछ दिन और जिंदा रहती मैं आपको देख लेती, दो बातें कर लेती। जिन्दगी की यह सच्चाई जानते हुए भी कि जिन्दगी अपने हिसाब से नहीं चलती फिर भी उम्मीद करती रही कि मैं अगले साल नौकरी छोड़ कर आपके पास आकर रहूंगी। लेकिन यह हो न सका।

हमारा भाई तो पहले ही नहीं था। पापा जी के जाने के बाद लगा सारा ढांचा ही हिल गया। आपके होने से फिर भी लगता था कि आप हम को एक सूत्र में बांधे हुए हैं। हर वक्त Moga आने को आपसे मिलने को मन बैचेन रहता था। अब आपके न रहने से लगता है कि आखिरी link जो हम सब को जोड़े हुए था, वो भी टूट गया है। और सब कुछ बिखर कर खत्म होता नज़र आ रहा है। ज़हाज से पहली बार जब देहली शहर नज़र आया करता था तो मन जल्दी ज़मीन पर उतर कर सबको मिलने को बेचैन हो जाता था। इस बार ऐसे लग रहा था कि इसी जहाज से वापिस ही चली जाऊं तो अच्छा है।

मोगा घर आ कर ऐसा लगा कि आज मैं अनाथ हो गई हूं। हम बहनें अनाथ हो गई हैं। घर में घुसते ही अब हमें बाहों में भरने वाला कोई नहीं रहा। घर में आकर एक एक चीज़ में एक एक कमरे में आपकी याद सताने लगी। आपके चलने की आवाज़ सुनाई देने लगी। आपके बोलने की आवाजें सुनाई देने लगीं। मन ही मन में आपसे बातें करने लगी। आपके पुराने दिन याद आने लगे। आपने दिन रात हमारे लिए क्या कुछ नहीं किया। सर्दी हो, गर्मी हो, आपकी खुद की तबीयत ठीक हो या न हो, हमेशा हमारे सुख का हमारी चाहत का ध्यान रखा। अपना बचपन याद आने लगा, स्कूल कॉलेज के दिन याद आने लगे, जब मैं फिरोज़पुर देव समाज कॉलेज में पढ़ने गई थी उन दिनों की याद कुरूक्षेत्र पढ़ने गई थी उन दिनों की याद आने लगी। हमें घर से विदा करते जो आपकी हालत हुआ करती थी वो दिन याद आने लगे। शादी के दिन और फिर जब भी मेरा यहां भारत आना होता वो दिन, जब भी मेरे बच्चे यहां आते और जब मैंने अपने बच्चे यहां मोगा में कुछ देर के लिए छोड़े थे तो वो दिन याद करके दिल बैठने लगा। आपने क्या कुछ नहीं किया मेरे लिए और मैं आपके इन मुश्किल के दिनों में आपके पास भी न पहुंच सकी, इस बात का ख्याल बार बार मन को दुःखी करता है।

बीजी आपने अपनी सारी उम्र परिवार की सेवा में ही निकाल दी। मेरा बड़ा बेटा मनु मोगा में पैदा हुआ था। उस वक्त सारी रात आपने मेरे साथ बिता कर और बाद में हम दोनों की जितनी सेवा की है मैं कभी नहीं भूल सकती। इसी तरह करूणा का बड़ा बेटा जब बिट्टू पैदा हुआ उस समय व बाद में कई साल बिट्टू की सेवा करके कैसे करूणा ने और बीजी ने उसकी जान बचाई वो किसी से छिपा हुआ नहीं है।

पापा जी अपने व्यापार में, देवसमाज में और जनसंघ के काम में बहुत व्यस्त रहा करते थे। घर की सारी जिम्मेदारी बीजी के कंधों पर ही थी। घर में जनसंघ के लोगों का आना जाना और दुकान से कई बार बाहर से आने वाले ग्राहकों का खाना भी घर से ही जाता था। घर में इतना बड़ा परिवार, बाबा जी का खाना भी इधर आपके पास ही था। जनक राज (मेरे मासी जी का बेटा) भी कई साल तक आप ही के पास रहा।

हमारे प्रसिन्नी मासीजी का कोई बच्चा नहीं था। मासड़ जी के गुज़र जाने के बाद आपके पास ही रहे। लड़कियों वाला घर होने के कारण पापाजी किसी भी नौकर को घर रखने के खिलाफ थे। आपने सारी उम्र अपने नियमों से कितना काम लिया है उसको सामने लाकर अपना आप आपके सामने बिल्कुल तुच्छ नज़र आता है। मैं बहुत छोटी थी जब हमारे दादी जी चले गए थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि उनकी बिमारी में भी आपने और पापा जी ने उनकी बहुत सेवा की थी। दादा जी के चले जाने के बाद आप ही ने सब रिश्तेदारों के साथ सम्बंध बनाए रखे। उनके आना जाना, देना लेना आपकी ही जिम्मेदारी बन गई जिसको आपने बड़ी अच्छी तरह निभाया। वैसे तो पापा जी तीन भाई थे लेकिन मेरी सब बुआ जी का मायका आप ही के कारण बना हुआ था। एक यही घर था जहां सब मर्जी से आ जा सकते थे। आपके न रहने से उनका मायका तो खत्म हुआ ही है हम सब बहिनों का मायका भी खत्म हो गया है।

बीजी आपका जीवन तो सेवाकारी और सुन्दर था ही आप देखने में भी बहुत खूब सूरत थे। लम्बा कद, खूबसूरत शक्ल, गोरा रंग व खूब लम्बे घने काले बाल। आपके साथ कभी बाजार जाने का मौका मिलता था तो आपके साथ साथ चलना और रास्ते में कोई सहेली मिल जाए तो उसको यह कहना कि मेरे साथ जो हैं वो मेरी बीजी हैं कहने में गर्व महसूस होता था।

आपकी जिन्दगी को दो पन्नों पर उतारना मेरे लिए नामुनकिन है। पापा जी के जाने के बाद आपके दिन बहुत मुश्किल से निकले हैं। पिछले 2-3 साल से आपकी सेहत जवाब दे गई थी। आपकी इतनी बेटियां होने के बावजूद आपकी सेवा में बहुत कमी रही है। विशेषकर मेरी तरफ से तो बहुत ही कमी रही है। मेरे अपने हालातों के कारण अपनी नौकरी के कारण व हज़ारों मीलों की दूरी के कारण मैं वो नहीं कर पाई जो मुझे करना चाहिए था। लेकिन कमलेश और करूणा ने अपनी समझ बूझ के अनुसार जितना उनसे हो सका आपकी सेवा की है। विशेष कर करूणा ने अपना घर बार छोड़ कर मोगा आकर आपके पास रह कर दिन रात आपकी जो सेवा की है उस के कारण हम बहिनें उसकी उम्र भर के लिए करज़ाई हो गई हैं। काश मैं उसी के लिए ही कुछ कर पाऊँ।

आपके जाने से जो हमारे परिवार में कमी आई है वो कभी पूरी नहीं हो सकती। आपके जाने का हम सब बहिनों को बहुत दुःख है लेकिन यही सोच कर तसल्ली करने की कोशिश करूंगी कि अब तक आप हमारे पास थे और एक लम्बे बिछोड़े के बाद आप अब अवश्य पापा जी के साथ होंगे। यही कामना करती हूं कि आपकी आत्मा को शान्ति मिले और हम सब पारिवारिक जनों को इन नए हालातों से जूझने की हिम्मत मिले। आपकी परलोक यात्रा में आने वाली बाधाएं दूर हो और परलोकवासी सम्बंधी उसमें ज्यादा से ज्यादा सहायकारी बने। जबसे पापा जी गए हैं तब से लेकर आज तक हमारे जीजा जी (स्वामीशरण अग्रवाल) का रोल हमारे परिवार में बहुत खूबसूरत रहा है। उन्होंने इस परिवार की बहुत सेवा की है। इन्होंने दामाद होकर बेटे का रोल अदा किया है। जिसके कारण मैं उनकी बहुत आभारी हूं।

बीजी, अंत में अपनी कमियों के लिए मैं आपसे माफी मांगती हूं। अगर आप न होते तो आज मैं भी न होती इस वक्त का एहसास करते हुए, आपके पवित्र श्री चरणों में सिर रख कर आपको प्रणाम करते हुए आपकी ये बेटी आज आपको विदा करती है।

देव प्रभा

शुभ संग्राम

(2 मार्च– 10 मार्च)

2 मार्च को श्रीमान बलदेव सिंह जी श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा, श्रीमान मधु सुदन जी की पार्टी चण्डीगढ़ से 11 बजे के बाद रवाना हुई। 1.30 बजे संगरूर श्रीमान सीता राम जी को मिले। वहां सभी ने भोजन लिया व आगे रवाना हो गए। रास्ते में श्रीमान बलबहादुरसिंह जी भी शामिल हो गए।

जंडवाला : 5 बजे के करीब पहुंचे। वहां पर भूतपूर्व सरपंच मोहर सिंह जी के घर पहुंचे। उनके जवान बेटे की अति सुखदायी मौत का अफसोस किया। दु:ख सांझा करने की कोशिश की। फिर यह पार्टी थराजवाला पहुंची। श्रीमान बलदेव सिंह जी व श्रीमान बलबहादुर जी कुछ धर्म सम्बन्धियों के घर घर जाकर मिल कर आए।

थराजवाला : यहां पर रात को सभा की गई। इसमें 15 – 18 जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि महाराज ने एक लक्ष्मण रेखा लगाई है। जो उनकी सीमा में रहते हैं वह हमेशा सुखी रहते है और हालात अनुसार विकास करते हैं। गुरू महाराज ने मिथ्या सम्बन्धी, पापाचार सम्बंधी, नीच संगत के सम्बंध में विशेष रेखा लगाई है। उसका पालन करना बहुत ही जरूरी है। सभापति जी ने अपना उदाहरण देकर कुछ दूसरे जनों के भी सुन्दर दृष्टातों का वर्णन किया व गुरू महाराज की लगाई रेखा के अंदर रहने की प्रेरणा दी।

3 मार्च को दिन में 3 बजे एक सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलबहादु जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि विकास का साथ देने से मनुष्य उन्नति करता है। ऊँचा उठता है, विकास पाता है। न साथ देने से उसका पतन जरूरी है। नए बीज, नई सवारी, नए ईलाज, नई खोज आदि का साथ देने से विकास पाता है। न साथ देने वाला पिछड़ता है। हानि उठाता है। दु:खी होता है। देवात्मा ने जो संगत व शिक्षा पैदा की है वह बिल्कुल नई व अनोखी है। उस के साथ जुड़ने से मनुष्य सब पक्षों में विकास पाता है। जो शिक्षा को छोड़ते हैं उनका पतन होता है। वह हानि उठाते हैं व बेहद घाटा उठाते हैं।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी इस विषय को और भी साफ करने की कोशिश की।

रात को फिर एक सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि प्रभावों का नियम जारी है। बुरे असरों से घिर कर मनुष्य महाहानियां उठाता है व बर्बाद होता है। इस को सिद्ध करने के लिए उचित उदाहरण पेश किए गए। उच्च असरों में आकर मनुष्य नई होश पाता है, रक्षा पाता है, विकास पाता है। गुरु महाराज के देव असर सब से महान हैं। उनको प्राप्त करके मनुष्य तबाही से रक्षा पाता है व नाना पक्षों में हित पाता है। इस सभा में 15 के करीब जन थे।

4 तारीख को बाहर से एक बाप बेटा पहुंचे। जंडवाला से श्री मोहर सिंह जी व उनका पौत्र पहुंच गए। कुछ अन्य जन भी आ गए थे। इसमें बताया गया कि मनुष्य की रक्षा के लिए गुरु की संगत किस प्रकार जरूरी है। इस के लिए श्रीमान

जी लगभग 1:30 घंटा समझाते रहे। सभी ने इस सत्संग को महसूस किया। सवेर 9 से 1:30 बजे तक हितकर बातचीत होती रही। मोहर सिंह जी ने 200 रूपये अखबारों का चंदा दिया।

शाम को यह पार्टी गंगानगर होती हुई पदमपुर पहुंच गई।

पदमपुर (राजस्थान) रात को 8.00 बजे एक सभा की गई। इसमें 35-40 जन आकर शामिल हुई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को नई रोशनी, नए विचार, नए ख्याल, नई खोज का स्वागत करने की जरूरत है। नहीं तो इन्सान नुकसान उठाकर पीछे रह जाएगा।

धर्म अच्छे इंसान बनने का नाम है, न कि पाठ, जाप, पूजा आदि का नाम है। अच्छा बनना दूसरों से अच्छे व्यवहार करना है। जिस के व्यवहार अच्छे नहीं, उसके पास धर्म नहीं।

गुरु महाराज अच्छे इंसान बनाने का कार्य करते हैं। श्रीमान राम सिंह जी का जीवन कहां से उठाकर ऊँचा बना दिया, यह उदाहरण पेश किया गया। इससे हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे।

5 मार्च सुबह की सभा के सभापति भी श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इसमें 20 के करीब जन थे। इसमें बताया गया कि धर्म जीवन या जीवन पथ बिल्कुल एक अलग चीज़ है। धन संपदा या मान बढ़ाई आदि से धर्म के साथ कोई सम्बंध नहीं है। इनकी प्राप्ति जीवन का नाश करते हैं। धर्म जीवन की प्राप्ति के लिए जीवन तत्व के ज्ञान की परम आवश्यकता है। जीवन तत्व से अंधे रहकर लाखों करोड़ों जन नष्ट हो रहे हैं। गुरु महाराज ने ही जीवन तत्व दिखाया है। हमें अपने से निकालकर दूसरों के काम आना चाहिए।

5 बजे शाम को फिर एक सभा की गई। कुछ जन आकर सवाल पूछते रहे। जिससे उनको ठीक उत्तर दिए गए। उन्होंने अगले दिन भी इसी प्रकार मिल बैठ कर सवाल पूछने की इच्छा प्रगट की।

रात को 8.00 बजे एक और सभा की गई। इसमें हाजरीन की संख्या काफी अच्छी थी। गज सिंह पुर से कुल 9 जन पहुंचे। स्थानीय जन भी अच्छी संख्या में पहुंचे व सभा स्थान पूरी तरह भर गया था। इस सभा में बताया गया कि हर इंसान का आत्मा रोगी है। आत्मा की हानि हो रही है। परन्तु मनुष्य को यह नजर ही नहीं आता। आत्मा के रोगों की सूची में एक एक रोग के बारे मोटा मोटा ब्यान किया गया। बताया गया कि केवल भगवान देवात्मा ही हमें हमारे आत्मा के रोगों का भयानक रूप दिखा सकते है व उनसे हमें मुक्त कर सकते हैं।

6 मार्च इतवार सुबह 8.30 बजे एक सभा की गई जिसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इस सभा में भी हाजरी अच्छी थी। 40 के करीब जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि जीवन पथ कुछ विशेष चीज़ है, यह जप, तप, योग-समाधि, रीति शोधन, तीर्थ-यात्रा, राज आन्दोलन, यशकीर्ति, पद-उपाधि आदि से कोई सम्बंध नहीं रखता। धर्म का सम्बंध आत्म तत्व, आत्म ज्ञान, आत्मा की रक्षा व आत्म विकास से है। सभा भले ही श्रोतागण के संस्कारों व विषयों के विरुद्ध थी परन्तु फिर भी आप सब बहुत टिक कर शांतिपूर्वक लाभ उठाते रहे।

5 बजे से 7 बजे तक 6 जन आकर

हितकर बातचीत करते रहे। एक जन ने टी. वी. में सभाओं का नोटिस देने के लिए एक अधिकारी को बुलाया व नोटिस लिख कर उसको दिया।

एक पत्रकार को भी बुलाया गया व सभाओं का नोटिस देने के लिए मैटर लिखवा दिया। उन्होंने सब ने अन्य सहायता करने की भी इच्छा दर्शायी।

रात 8.30 बजे फिर एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि "बेमुख हुआ राम से, बिआयन सभी रोग" ठीक नहीं है। मनुष्य की सब मुश्किलें, दु:ख, कष्ट, अपमान, असफलताएं, गरीबी, रोग, कलह-कलेश आदि का एक ही कारण है। वह है उसके नीच अनुराग व नीच घृणाएं। इस सच्चाई को उदाहरण द्वारा पेश किया गया। इस सभा में हाजरी काफी थी। मिथ्या धर्मों के खिलाफ ब्यान किया गया।

7 मार्च की सवेर 8.30 बजे एक सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। 40 के करीब जन आकर सभा में शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि उच्च भावों का नाम ही धर्म है। बिना उच्च भावों के कोई धर्म नहीं। खेती की तरह संग्राम करके उच्च भाव पैदा करने पड़ेंगे। श्रद्धा भाव की बनावट का ब्यान किया गया। यह वह आंख है जिससे महान जीवन दिखाई देता है। इनके आगे हृदय झुकता है। उनके गुण दिखाई देते हैं। अपना आप उनके मुकाबले में तुच्छ दिखाई देता है। बार बार महान जीवन देख कर सिर झुका झुका करके श्रद्धा भाव बढ़ जाता है। महान जीवन को देखने की आंख बन जाती है। इससे धर्म आने लगता है। यह धर्म जीवन का मूल है। सभापति जी ने बताया कि वह कैसे दूसरों के गुणों व महान जीवन को देखते हैं। किस प्रकार राजा राम मोहन राय, भगत पूर्ण सिंह को देख देखकर अपनी सच्ची तुच्छता को देखते हैं। इस सभा से हाजरीन प्रभावित हो रहे थे।

रात की सभा में हाजरीन की संख्या अच्छी थी। कुछ जन पदमपुर से और आ गए। लोकल अखबारों में भी सभाओं का नोटिस छप गया था। ज़ी. टी. वी. के चैनल के नीचे सभाओं का प्रोग्राम बताया जाता रहा। रात की सभा में बताया गया कि मनुष्य के स्वरूप से देवात्मा ने पर्दा उठाया है। मनुष्य ज्योति स्वरूप या ब्रह्म स्वरूप नहीं। वह नीच सुखों में फंसा हुआ है। वह पापी व पिशाच है। दुराचारी व हानिकारक है। वह अपना शत्रु व दूसरों का शत्रु है। वह असुर्फ उल मख़लूपात नहीं है। इस भेड़िया स्वभाव को बदलने का काम देवात्मा कर रहे हैं। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

8 मार्च सवेर की सभा में बताया गया कि शुक्रगुज़ारी धर्म का एक जरूरी अंग है। इसके बिना कोई धर्म नहीं होता। इस भाव के बिना सम्बंधों में नरक छा जाता है। शुक्रगुजार हृदयों के बारे में ब्यान किया गया। हर मनुष्य दूसरों का उपकृत है। दूसरा उसको उपकारी दिखते नहीं। उपकारियों को सताया गया है। उपकारियों का कर्जा उतारना बहुत मुश्किल है। नामुमकिन है।

'धरुं मैं ध्यान सतगुरु जी तुम्हारा' वाला भजन एक एक पद पढ़कर सुनाया गया। देवात्मा नाशुकरों को शुक्रगुज़ार बनाते हैं। सभापति जी ने अपने उपकारियों का ब्यान भरे दिल से किया। यह सभा भी बहुत प्रभावशाली थी।

रात की सभा से पहले बलबहादुर जी आ

गए। इस सभा में भी हाजरी अच्छी थी। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है। सिर्फ धन कमाना, विद्या, धन, पदवी, उपाधि, परमात्मा की प्राप्ति, स्वर्ग, जूनों से मुक्ति आदि सब में से कोई भी मनुष्य का लक्ष्य नहीं। भगवान देवात्मा ने बताया है कि अपने आत्मा का ज्ञान व उसका कल्याण करना मनुष्य का लक्ष्य है। आत्म ज्ञान व आत्म कल्याण ही मनुष्य का सत्य लक्ष्य है। इस की सुन्दर व्याख्या की गई। जो गुरु महाराज ने मनुष्य का लक्ष्य बताया है उस की सरल व्याख्या की गई। हाजरीन वर्षा आदि के बावजूद भी अच्छी तरह ध्यानपूर्वक सुनकर लाभ उठाते रहे।

9 मार्च सवेर की सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी करवाई। "देते हैं धन्यवाद तुम्हें ....." वाला भजन गाया गया। फिर दया के भाव की जरूरत व उसके रूप के बारे में ब्यान किया गया। बताया गया कि जो जन किसी दूसरे के काम नहीं आता परन्तु केवल अपने लिए ही जीवित रहता है वह जोंक है, उसके पास धर्म नहीं। "दया बिन ध र्म के दावे जैसे घी के बिना पकवान" होता है। अगर दूसरों के दु:ख तकीलफें आपको हिलाती नहीं वहां पर धर्म नहीं है। परपीड़ा देख के उस को निवारण करने के लिए कुर्बानियां करने वालों के सच्चे उदाहरण दिए गए। बहुत सुन्दर वातावरण बना। कई जन आंखों से आंसू बहा रहे थे। एक जन खड़े होकर अपनी पत्नि के सम्बंध में अपने कठोर व्यवहार को देख कर व्याकुल हो उठे। उसके लिए माफी मांगने के लिए मजबूर हो गए व सभा में उसका प्रकाश करने के लिए बेबस हो रहे थे। गुरु महाराज के कारज की धाक कई दिलों पर पड़ रही महसूस हो रही थी।

दोपहर बाद 4 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ एक पार्टी गजसिंह पुर के लिए रवाना हुई। वहां पर 5 बजे उन्होंने एक सभा करवाई। इस सभा में 40 के करीब हाजरी थी। नेचर में सब घटनाएं नेचर के नियमों के अनुसार होती हैं। नियम अटल हैं। इसलिए इनके उलट कोई घटना नहीं होती व न ही पैदा की जा सकती। धर्म या पाप यह सब नेचर के नियमों के अनुसार ही होते हैं।

8.30 बजे रात की सभा पदमपुर में सम्बंधों के विषय में करवाई गई। सम्बंधों के बिना कोई विकास सम्भव नहीं। भगवान देवात्मा ने सम्बंधों को किस किस भावों से धार्मिक व विकासकारी बनाया जा सकता है इस की शिक्षा दी है। अनेकों जनों को सम्बंधों में धार्मिक जीवन जीने के योग्य बनाया है। धर्म की सच्ची तस्वीर जगत के सामने रखी है। सभापति ने अपने सम्बंधों में आए उच्च परिवर्तन की तरफ ध्यान फेरा।

10 मार्च, 2005 को सुबह 10: 30 बजे एक सभा की गई जिसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। सभा स्थान श्रोतागण से खचा-खच भर गया था। सभापति ने फरमाया कि मनुष्य अंध कार का जीव है। व अंधकार का चौथा पक्ष जिसमें इंसान अपने आप के सम्बंध में अंधेरे में रहता है। उसका अपनी गलतियों, कमियों, कमज़ोरियों, अपनी गुस्ताखियों की तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

नेचर के विकास के क्रम में देवात्मा के अंदर ऐसी अद्वितीय योग्यता पैदा हो गई है जो इंसान का ध्यान उसके नीच जीवन की तरफ फेरती है। इंसान अपना नीच जीवन देखने के लिए व स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है।

अपने नीच जीवन से मुक्त होने के लिए कोशिश करता है। देवात्मा की देव ज्योति जब मनुष्य आत्मा के अंदर प्रवेश करती है, तो उस की असल हालत उस पर प्रगट होती है। बच्चे माता पिता के प्रति बूरे स्कूलों को देखने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इसलिए बाकी सम्बंधों में भी मनुष्य अपना प्रकृत रूप देख कर शर्मशार होते हैं। इसके बाद सभापति जी ने हाजरीन को अपने भाव प्रगट करने की प्रेरणा दी।

पदमपुर में आखरी सभा के बाद कुछ लोगों ने अपने आप भावप्रकाश किए जो इस प्रकार हैं।

श्रीमान गोयल जी : इस दर पर आकर अपनी नीचताएं नज़र आने लगी हैं। सभाओं में, सफर में, घर में अब अच्छे विचार चलते हैं। मैं जुत्ते खाने व मुंह काला करवाने से गुरु महाराज की कृपा द्वारा बच गया हूं। श्रद्धाभाव के बारे कुछ समझ आई है। दूसरों के गुण नज़र आने लगे हैं। अपने जीवन का कुछ पता चला है कि मैं कितने पानी में हूं ऐसे सत्संग की बहुत गहरी जरूरत महसूस होती है। धन्य है वह जो इसमें ही संग्राम करते हैं। गजसिंह पुर में एक ही सभा रखी गई जो बहुत ही थोड़ी महसूस होती है।

शिवदर्शन जी : अपना जो समय शेष रह गया है उसको भले कार्यो में लगाना चाहता हूं। यह गहराई के साथ महसूस हुआ है। हम अपने जातिवाद को लेकर झगड़ते हैं। इस से निकलना है। छोटा दिल नहीं रखना। भली संगत में आकर होश आती है। अपनी गलती के लिए माफी मांगने की जरूरत महसूस हुई है। मैं कुछ सभाएं नहीं सुन सका। इसका दु:ख व अफसोस हो रहा है। अपना अहं व लोभ दिखाई दिया है। हम दहेज लेते है। लड़कर भी दहेज लेते हैं। इन चीज़ों से बचने का सवाल आता है। एक अच्छे खानदान के बच्चे को ड्रग्स लेने की आदत पड़ गई है।

उसके प्रति हमदर्दी महसूस हुई है। उसको बचाने की जरूरत महसूस हुई है। पहले मुझे अपने उपकारियों का कोई पता नहीं लगता था। अब मुझे कुछ पता लगने लगा है। हम सभी मिल कर दु:खी व जरूरतमंद विधवाओं के रहने के लिए कुछ कमरे बनवा सके, यही मेरी बिनती है।

श्रीमती रीता जी :– मैं गोपाल जी की सहायता से सत्संग में आने लगी हूं। यहां पर आकर अपनी कमियां नजर आने लगी हैं। मेरे अन्दर मिथ्या विश्वास हैं। मुझे यहां आकर कुछ मिथ्या विश्वास भी नज़र आए हैं। (भरे दिल से) बहुत दु:ख व पछतावा हो रहा है। अब कुछ नहीं हो सकता। काश! मैं इस सत्संग से और ज्यादा लाभ उठा सकूं। उन्होंने 500 रूपये दान में दिए। कुछ दूसरे जनों ने भी अपने आप दान दिया। कुल 1000 रूपये वहां से दान प्राप्त हुआ। इस प्रकार गुरु महाराज भी अपार कृपा व सहायकारियों की कृपा द्वारा यहां पर संग्राम किसी अंश सफल हुआ।

खुशी की बात है कि पदमपुर में काफी खर्च करके एक मकान खरीद लिया है जिस में और कमरों के इलावा 20 X 25 का साधन मन्दिर तैयार हो रहा है। इस प्रकार मिशन का यहां अपना नया स्थान बन जाएगा।

इस प्रकार मल्लेका में main road पर मन्दिर के लिए तकरीबन 3 कनाल की जगह खरीद ली गई है। आशा है कि जल्द ही सभा साधन उस स्थान पर होने शुरू हो जाएंगे।

PEARLS SUBLIME .....

Proclamations of Bhagwan Devatma freely translated from "*Param Poojniya Bhagwan Devatma ke besh baha vachnon ka gutka*" published in Urdu in 1964.

IN RELATION TO DEVATMA (Continued from the previous issue)

7. In this war (against falsehood and evil), my heart has been repeatedly resounding with the echo: Do not ever retreat and, assuredly, I will never retreat. Weeping and wailing and rolling in agony, I will surely go on fighting in this battlefield.

8. It is imperative for any soul to develop hatred, in accordance with his capability, for one or the other such evil or sin abhored by me to the extent he imbibes my highest spiritual influences.

9. To the extent any soul assimilates my highest spiritual influences, he develops pain and agony for any vicious thought or deed in accordance with his capability.

10. I am the ship of life'e hope for the souls drowning in the ocean of viciousness. I am like an elixir to save, upllift and evolve the communities and races from their degradation due to vicious environments.

11. The superb elixir of the highest spiritual life that I possess anhilates the evil. So, it is the true source of the good and uplift ment of souls stricken with the poison of evil.

12. There is no such soul who comes under my influence to any extent and does not become superior or better as compared to his previous condition.

13. I am not bound with any human being or any other existence. I am the compulsive lover of only the truth and goodness and my relationship with every existence is primarily based on the truth and goodness.

14. As long as a man carries any attraction for falsehood and evil in some aspect, he cannot develop attraction in that aspect for Devatma - the truth and goodness personified.

(Continued to the next issues)

References:

7. (Advitiya Tyag, Volume II)
8. (Mujh Mein Dev Jeewan Ka Vikas, Volume I, Chapter 8)
9. (As above)
11. (As above)
12. (As above)
13. (Satya Dev Samvad 12.8.30)
14. (Satya Dev Samvad 12.8.30)

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

A Treat for the Blossoming Souls

The Need For Propagation of *Dev Dharma*

If some higher feelings have sprouted in you, if you feel comparatiavely greater inspiration and enthusiasm for propagation of higher life, if you continue to increasingly realize the grandeur of the manifestation of Dev Dharma; then don't you realize that you can make progress in your higher life only by service and contribution to Dev Dharma? Don't you see that there is a dire need to open such work centres in every state of India where, as far as possible, deserving persons can be protected from their lower actions and ruin by infusing in them the unique light and power of the bestower of Dev Dharma? If you know and perceive it, then why don't you offer yourself to devote your life for such a unique mission? No, other work or sacrifice is superior to this. There is no other source of spiritual growth. Where are those who wish to help enhance the number of higher life propagators through their money and their well wishes?

(English rendering of article in "*Param Poojniya Bhagwan Devatma Ke Lekh Aur Updesh*", Vol 3, Page 77, Dec. 1939)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts